लघुकथायें –

1– तरकीब

रोज–रोज नीम,आम,केला की पत्ती मांगने वालों से तंग आकर मि. दयाल ने घर के सामने सूचना बोर्ड लगा दिया और उस पर लिखवा दिया– पहले एक पेड़ लगाने की कसम खाये – फिर गुहार लगाये । मि. दयाल की तरकीब काम आयी और लोगों के घर–आंगन में पेड़ झूमने लगे ।

2– सलाम

अभी रूकना था । वार्ड ब्वाय पेन लाना ।
ये लीजिये ।
नही सर आप रखिये ।
लिखकर वापस कर दीजियेगा ।
समय के पुत्र की कलम थामने का दुहसाहस कैसे कर सकती हूं।
डा. बहन ऐसा क्यों ?
कलम का सम्मान,समय के पुत्र को सलाम करती हूं ।
मै आपके सदभाव को ।

3– फैसला

एक दिन श्रेष्ठता और योग्यता में विवाद हो गया । श्रेष्ठता के अभिमान की बिजली योग्यता के उपर गिरने लगी ।योग्यता ने नम्रता पूर्वक कहा आग मत उगलो आओ फैसले के लिये पंच–परमेश्वर के पास चले। आना–कानी के बाद आखिरकार श्रेष्ठता मान गयी । पंचो ने योग्यता को सर्वश्रेष्ठ माना। अन्ततः श्रेष्ठता ने योग्यता के महत्व को स्वीकार कर पश्चाताप करने लगी क्योंकि फैसला समझ में आ गया था । श्रेष्ठता को पश्चाताप की अग्नि में जलते हुए देखकर योग्यता ने गले लगा लिया ।

4–भीख

एक रूपया दे दो जोर की भूख लगी है कहते हुद भीखारी ने हाथ फैला दिया ।
पराठे खा लो भूख लगी है तो।
पराठे नही ।
क्यों मैं भी तो खा रहा हूं ।
एक रूपया दे दो ।
खुले नही है ।
कंजूस भीख नही दे सकते कहते हुए वह भीखारी बालक आगे चला गया ।

5–दलाल

कहां जाना है साहब ? अवन्तिका से जा रहे है क्या ?टिकट कन्फर्म है ?
क्यों पूछताछ कर रहे हो भाई ।
मुसीबत में ना फंसो इसलिये ।
कैसी मुसीबत ?
देखिये इन साहब को दलाल से टिकट लिये है । ट्रेन आने के समय पता चला है कि टिकट वेटिंग में है । अपना टिकट देख लो साहब दो सौ रूपये लगेगे कन्फर्म करवा दूंगा ।

मेरा कन्फर्म है रास्ता नापो ।
कन्फर्म कैसे हो गया चार वेटिंग है। टिकट और दो सौ रूपया दो मैं कन्फर्म टिकट लाता हूं।
भाग रहा है या पुलिस बुलाउ । इतना सुनते ही वह ठग भीड में गायब हो गया ।

6–जंग

मुख्तार बाबा को मरे कुछ महिने बिते थे कि दोनो बेटो ने चल –अचल सम्पति को आपस में बराबर बांट लिया । मां को एक कमरा देकर उसे भी पन्द्रह–पन्द्रह दिन के लिये बराबर बांट लिये । 31 दिन का भी महिना होता है याद ही नही रहा । बंटवारा होते ही मां दाना–पानी के लिये तरसने लगी । कुछ ही महीनों में वह भूख से मर गयी । मां के मरते ही दोनों बेटों में कमरे पर कब्जा के लिये जंग छिड़ गयी ।

7–नशा

नशे में धुत लड़खडाते हुए चवन्नीदादा धड़ाम से खटिया पर गिर पड़े । बाप की दशा को देखकर बेटा पांव सीधा करते हुए बोला बाबू–बेटा–बहू, बेटी–दमाद,नाती–पोते की कसम का असर तुम पर नही हुआ । कुछ तो लिहाज किये होते । गांजे –दारू के नशे से कौन सा स्वर्ग का सुख मिल रहा है जो बेटा–बहू, बेटी–दमाद,नाती–पोते के सुख से तुम्हारे लिये बड़ा हो गया है ।
चवन्नीदादा गरियाते हुए बोले– दो अक्षर पढ क्या लिया कि बाप बनने लगा है । अरे मैं तेरा बाप हूं या तू मेरा बाप है। नालायक बाप की सेवा नही कर सकता। कोई मरे या जाये मुझे तो पीने से काम है बस।

8–भूचाल

बाप रे लोग ऐसी दुर्दशा?
कहां भूचाल आ गया ?
आज का युग संस्कृति,साहित्य और कला के लिये भूचाल से कम है क्या ?
ये दर्द कैसे उभरा भाई ?
कलाकारों की दुर्दशा देखकर ।
समर्पित लोग ठोकरे खाकर भी कला को जीवित रखे हुए है । लाचार हो जायेगे तो क्या ?
पश्चिम का षणयन्त्र सफल हो जायेगा और क्या ?
ऐसा नही होना चाहिये ।
क्या होना चाहिये ?
साहित्य और कला को सरकारी सहयोग और जागरूक नागरिकों का समर्थन मिलना चाहिये।

9– प्रयोगशाला

माना जाता है कि धर्म के नाम पर देश का बंटवारा हुआ ।
अब क्या कौन बंटवा रहा है भाई?
कला, वही लोग ।
कैसे ?
जैसे हुसैन अपनी माटी से दूर हो गये ।
ये धर्म नही । धर्म का काम तो मानव जीवन और देश में सुख–सम्वृद्धि, अमन–शान्ति बनाये रखना है। देश छुड़ाना, आतंक फैलाना नही ।

साहित्य और कला चिन्तक के अर्न्तरात्मा की स्वस्थ अनुभूति होती है। इस अनुभूति को धर्म की प्रयोगशाला में जांचना–परखना अन्याय है। आज धार्मिक उन्माद अनुभूति पर लटकी हुई खंजर के समान हो गया है काश ये असुरी साये छंट जाते पर .....

पर क्या भाई ?

एम.एफ.हुसैन का इस तरह से देश छोड़ना दिल का दर्द बन गया ।